C397

Total Pages : 3 Roll No. .....

BASL-102

नीतिकाव्य व्याकरण एवं अनुवाद

कला में स्नातक (बी.ए.)

First Year Examination, 2022 (June)

Time : 2 Hours] **Max. Marks : 80**

नोट : यह प्रश्नपत्र अस्सी (80) अंकों का है जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

(खण्ड-क)
(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बीस (20) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×20=40)

1. संस्कृत नीति साहित्य का परिचय प्रस्तुत करते हुए नीति साहित्य में भर्तृहरि के योगदान की समीक्षा कीजिए।

2. नीति कथाओं के विकास तथा महत्त्व पर सारगर्भित निबन्ध लिखिए।

3. संहिता संज्ञा, पद संज्ञा, अनुनासिक संज्ञा तथा उदात्त संज्ञा के विधायक सूत्रों को लिखते हुए उनकी व्याख्या भी कीजिए।

4. गुण संज्ञा तथा वृद्धि संज्ञा के विधायक सूत्रों को लिखते हुए उनकी व्याख्या भी कीजिए।

5. हितोपदेश का परिचय देते हुए उसमें वर्णित 'सुहृद्भेद' का सारांश लिखिए।

(खण्ड-ख)
(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस (10) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×10=40)

1. संदर्भोल्लेखसहित अधोलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए–

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।।

2. प्रकृतिभाव विधायक सूत्र लिखते हुए उदाहरण एवं व्याख्या भी प्रस्तुत कीजिए।

3. वाच्य-परिवर्तन के सामान्य नियम लिखिए।

4. व्याख्या कीजिए–

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानम् न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

5. "अदर्शनं लोपः" तथा "समाहारः स्वरितः" सूत्रों की व्याख्या कीजिए।

6. कारकों पर परिचयात्मक टिप्पणी लिखिए।

7. मूषक परिव्राजक कथा का सारांश लिखिए।

8. हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

"अस्ति दाक्षिणात्ये जनपदे महिलारोप्यं नाम नगरम्। तत्र सकलार्थिसार्थकल्पद्रुमः प्रवरनृपमुकुटमणिमरीचिचयचर्चितचरणयुगलः सकलकलापारंगतोऽमरशक्तिर्नाम राजा बभूव। तस्य त्रयः पुत्राः परमदुर्मेधसो वसुशक्तिरुग्रशक्तिरनेकशक्तिश्चेतिनामानो बभूवुः। अथा राजा तान् शास्त्रविमुखानालोक्य सचिवानाहूय प्रोवाच – भोः ज्ञातमेदद्भवद्भिर्यन्ममैते त्रयोऽपि पुत्राः शास्त्रविमुखा विवेकहीनाश्च। तदेतान्पश्यतो मे महदपि राज्यं न सौख्यमावहति।"